



योग शिक्षा विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस –21 जून 2022 के आयोजन की विस्तृत रिपोर्ट

प्रातः 6.00 बजे से 8.30 बजे तक

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में योग को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। साधक को गुरुमुखी बनाता है योग। गुरुमुखी भाव को धारण करने वाला साधक सदैव नई ऊँचाईयों को प्राप्त करता है। इसलिए युवा पीढ़ी को मन मुखी से गुरुमुखी बनना पड़ेगा। एक बार गुरुतत्त्व विकसित हो गया तो मानव से मानवता के गुणों के उत्कर्ष का बखान सारा जग करेगा। उक्त उद्गार भारतीय शिक्षण मंडल के राष्ट्रीय महामंत्री प्रो. उमाशंकर पचौरी ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर योग शिक्षा विभाग में बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किए। प्रो. पचौरी ने कहा कि मानवता को खोजने का सूत्र योग है। जब सद्गुणों का व्यवहार और विचार में विकास होगा तब चरित्र का निर्माण होगा। एक उत्तम चरित्र धारण करने वाला व्यक्तित्व योगी ही हो सकता है। प्रो. पचौरी ने श्रीराम चरित्र का उदाहरण देते हुए राजा राम की मर्यादा पुरुषोत्तम की स्थित प्रज्ञा अवस्था को समझाया।

विशिष्ट अतिथि एन सी सी ब्रिगेडियर अशोक मिनोचा ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के महत्त्व को रेखांकित करते हुए कहा कि हमारी युगों पुरातन धरा का परिचय अध्यात्म और योग से ही होता रहा है। समय के साथ बदलते परिदृश्य में योग की परंपरा एवं अभ्यास क्रमों में भी बदलाव हुआ। उसी योग परंपरा को विश्व सूत्र में पिरोने का कार्य योग दिवस कर रहा है।

श्रीमती अरुणा सारस्वत ने कहा कि हमने विश्व की सबसे पुण्य भूमि पर जन्म लिया है। हम चेतना के परिष्कृत स्वरूप को धारण करने वाले आत्म स्वरूप प्राणी हैं जो विकार ग्रस्त भौतिक इंद्रिय शरीर के रूप में परिलक्षित होते हैं। स्वयं का स्वयं से परिचय कराने वाली विद्या योग विद्या है।

स्वागत भाषण देते हुए प्रो. गणेश शंकर गिरी योग विभागाध्यक्ष ने कहा कि इस वर्ष का योग दिवस मानवता के लिये योग विशय के लिए समर्पित हैं।

अध्यक्षीय उद्बोधन में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि आज योग समस्त सीमाओं के बंधनों से परे एक वैश्विक विद्या और साधना पद्धति के रूप में प्रतिष्ठित हो गया है। हमें संपूर्ण मानव बनाने का मार्ग योग विद्या ही प्रशस्त करती है। नैतिक मूल्य और चारित्रिक गुणों के विकास को बिना योग के कल्पित नहीं किया जा सकता। यदि योग नहीं तो मानव नहीं, मानव नहीं तो सृष्टि नहीं, सृष्टि नहीं तो प्रकृति एवं भूमंडल नहीं अर्थात् प्रभु को सर्वोत्कृष्ट कृति यदि मानव है तो मानवता के लिए केवल एक विद्या है और वह योग है। योग जीवन विज्ञान और कला है। प्रो. नीलिमा गुप्ता ने योग साधकों को सूक्ष्म अध्ययन कर गूढ़ रहस्यों को जानने योग को सही अर्थों में समझने का आह्वान किया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. नितिन कोरपाल ने किया। अंशी, पूजा, रोहित, राहुल, वैशाली, मानसी, संगीता, आयुशी, दीपे I, विकास ने वंदे मातरम नृत्य के माध्यम से भारत माता की स्तुति की। इस अवसर पर प्रो. चंदा बेन, प्रो. यशवंत ठाकुर, प्रो. आर. के. रावत, डॉ. गौतम प्रसाद, डॉ. राकेश मलिक, डॉ. विवेक जायसवाल, प्रो. जी.परन गौडा, डॉ. मनु गौराहा, सतीश कुमार डॉ. ब्रजेश ठाकुर, प्रज्ञा साव सहित विश्वविद्यालय परिवार के अनेक शिक्षक कर्मचारी उपस्थित थे। आभार ज्ञापन डॉ. अरुण साव ने किया।





अतिथि व्याख्यान एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम

आदिनाथ शिव जो योगीराज है उन्होंने रामकथा, सुनाते हुए रामचरितमानस की रचना की। राम का चरित ऐसे योगी की चरित है जो आसुरी सुंदरी शूर्पनखा के प्रणय निवेदन में समभाव धारण करते हैं, वह राम जो बाली वध पश्चात् पिता को दिए वचन के पालन में सुग्रीव राज्याभिषेक लक्ष्मण से करवाते हैं, तो वही राम धैर्य का परिचय देते हुए समुद्र से सम्मानपूर्वक लंका जाने हेतु मार्ग मांगते और रावण वध के पश्चात् स्वर्ण नगरी लंका को विभीषण को सौंप देते हैं। ऐसे उत्तम चरित्र योगी को वर्णन एक दूसरा सिद्ध योगी शिव ही कर सकता हैं। उक्त विचार प्रो. उमाशंकर पचौरी ने योग शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किए। प्रो. पचौरी ने रामचरितमानस में योग विषय पर केन्द्रित व्याख्यान में कहा कि योग आत्मशांति की प्राप्ति कराने वाली विद्या है। रामचरितमानस में शांति का प्रतीक देवी सीता हैं जो शुद्ध, प्रबद्ध, चैतन्य स्वरूपा हैं। सीता वे शांति की प्रतीक हैं जो विदेह जनक को आनंद प्रदान करती हैं, देह वादी दशरथ जिसने दसों इंद्रियों को रथ बना लिया है उनके परिवार में बहू बनकर मोह और आसक्ति का नाश करने का पाठ पढ़ती हैं और दशानन रावण जो तामसिक प्रवृत्तियों और आसुरी प्रवृत्तियों, अहंकार का प्रतीक हैं उसकी पूर्णतः निवृत्ति और मुक्ति का मूल कारण बनती हैं। इस तरह रामचरित मानस एक विशिष्ट ग्रंथ है जो पतंजलि के योगसूत्र का व्यावहारिक प्रकटीकरण करती हैं। रामचरित मानस जीवन के हर उस पहलू को उद्घाटित करता है जो मनुष्य के जीवनकाल में आते हैं और योगस्थ होकर, अपने स्व में स्थित होने की शिक्षा भी प्रदान करती है।

डॉ. मुन गौराहा ने अपने वक्तव्य में आधुनिक काल में विकारों के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहा जीवन में नकरात्मकता से प्रभावित और जनित तनाव— मधुमेह, अवसाद, हृदय रोग और मानसिक अशांति का कारण बन रहा है। इस बात का प्रमाण है कि बैठे बैठे लोग बेसुध और बेहोश हो जाते हैं, यद्यपि उनके शारीरिक लक्षण उस समय ऐसी किसी स्थिति की ओर ईशारा नहीं करते। परंतु योग वह सम स्थिति की अवस्था है जहाँ ऐसे व्यवधानों को उत्पन्न करने वाले कारक तत्वों का स्वतः ही नाश हो जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में योग पर केन्द्रित अपने वक्तव्य में श्रीमती अरुणा सारस्वत ने कहा कि शिक्षक की गोद में प्रलय और निर्माण दोनों की क्षमता होती है। शिष्य पर निर्भर करता है कि किस दृष्टि से वह गुरु और गुरुकुल के समक्ष प्रस्तुत होता है। नैतिक मूल्यों के हास और चरित्र के विघटन के इस दौर में इन मूल्यों की गुणवत्ता को यदि कोई विषय साध सकता है तो वह केवल योग विषय है। शिक्षा नीति में इस पर पर्याप्त महत्त्व देते हुए योग शिक्षा के विकास हेतु प्रावधानों को श्रीमती सारस्वत ने रेखांकित किया।

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने योग की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में जनसंख्या विस्फोट, पर्यावरण, प्रदूषण तथा तनाव जनित दिनचर्या में विश्रांतिकारक योग की भूमिका की वजह से योग को जीवनशैली का अंग बनाने हेतु सभी का आह्वान किया। प्रो. गुप्ता ने जीवन का पुनः संयोजन कर यौगिक जीवन पद्धति को अपनाने की बात कही।

स्वागत भाषण योगविभागाध्यक्ष प्रो. गणेश शंकर गिरी ने दिया और अंतर्राष्ट्रीय योग के संदर्भ में योग शिक्षा विभाग की विगत तीन माह की गतिविधियों से अवगत कराया। संचालन डॉ. नितिन कोरपाल ने किया। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे बधाई, बरेदी, लावणी, छत्तीसगढ़ी नृत्य, कविता, पाठ, भजन तथा लघु नाटिकाएँ भी प्रस्तुत की गईं। अंत में आभार ज्ञापन डॉ. अरुण साव ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षण, कर्मचारी, अधिकारी, विद्यार्थियों सहित शहर के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।







